Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
ISSN : 2582-0095
doi : https://doi.org/10.32628/GISRRJ

कानपुर नगर में व्यावसायिक संरचना का तुलनात्मक अध्ययन

प्रीती अवस्थी
शोधार्थिनी, डी०ए०वी० पी०जी० कालेज,कानपुर, सम्बद्ध–छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश।
डॉ हनी मिश्रा
शोध पर्यवेक्षिका, (असि0 प्रोफेसर) डी०ए०वी० पी०जी० कालेज,कानपुर, सम्बद्ध–छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश।

Article Info

Article History
Accepted : 20 Sep 2024
Published : 05 Oct 2024

Publication Issue :
Volume 7, Issue 5
September-October-2024

Page Number : 33-41

सांराश – कानपुर नगर में व्यावसायिक संरचना का तुलनात्मक अध्ययन करने से यह पता चलता है, कि कार्यशील जनसंख्या (2011) 562869 है, जो कानपुर नगर जनपद के कुल कार्यशील जनसंख्या 35.95 प्रतिशत है। 2011 की कृषक जनसंख्या एवं पारिवारिक उद्योग की जनसंख्या मे कमी दर्ज की गई है। कृषक मजदूर एवं अन्य कार्य के अन्तर्गत जनसंख्या में वृद्धि दर्ज की गई है। कार्यशील जनसंख्या में भी कमी आयी हैं, जिसका प्रमुख कारण जीवन प्रत्याशा एवं बेरोजगारी में वृद्धि से है। अध्ययन क्षेत्र एक कृषि प्रधान क्षेत्र है। यहाँ पर खनिज संसाधनों का अभाव है जिसके कारण खनिज आधारित उधोगों का भी अभाव हैं। अध्ययन क्षेत्र में मानवीय मूल्यों को ध्यान में रखकर क्षेत्र के सभी लोगो को आगे लाकर ऐसी व्यवस्था करनी होगी जिससे सम्पूर्ण जनसंख्या को रोजगार का अवसर प्राप्त हो सके और क्षेत्र का सर्वांगीण विकास हो।

संकेत शब्द : कार्यशील जनसंख्या. व्यावसायिक संरचना. अकार्यशील जनसंख्या. मजदूर. पारिवारिक उद्योग ।

परिचयः– व्यावसायिक संरचना का जनसंख्या के आर्थिक दृष्टि से विशेष महत्व हैं क्योंकि इससें जीवनयापन की दशाओं का ज्ञान होता है। जनसंख्या के व्यावसायिक संरचना का तात्पर्य सम्पूर्ण क्षेत्र में कार्यरत जनसंख्या के विभिन्न कार्यों के अर्न्तगत वर्गीकरण होता हैं। सामाजिक–आर्थिक एंव सांस्कृतिक विकास के विविध पक्षों से जनसंख्या के व्यावसायिक संरचना का घनिष्ट कार्यात्मक सम्बन्ध होता हैं। इससे किसी क्षेत्र मे रहने वाले नागरिकों के रहन–सहन और जीवन–स्तर का अनुमान ठीक–ठीक लगाया जा सकता है। मनुष्य अपने जीवनयापन से सम्बन्धित जो भी कार्य करता हैं, वह उसका व्यवसाय कहलाता हैं। दूसरे शब्दों में जीवकोंपार्जन के लिए की जाने वाली विभिन्न आर्थिक क्रियाओं को व्यावसाय कहते हैं।

किसी भी देश में विभिन्न आर्थिक कार्य में सम्मिलित जनसंख्या के स्वरूप को व्यवसायिक जनसंख्या संरचना कहा जाता है जनसंख्या की इन आर्थिक क्रियाओं की संरचना व्यावसायिक कहलाती है प्राथमिक अवस्था में

Copyright © 2024 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

खदान खोदना, लकड़ी काटने, चीरने, मछली पकड़ने या कंदमूल फल एकत्रित करने और विभिन्न प्रकार की फसलों को उगाने, गृहकार्य, कल कारखाने स्थापित करके या सेवा, व्यापार आदि सभी कार्य लोग अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति एवं भरण पोषण के लिए करते रहे हैं ये सभी आर्थिक कार्य से संबंधित है तथा एक कार्य को करने वालों को व्यावसायिक संरचना के अंतर्गत सम्मिलित किया जाता है व्यावसायिक संरचना से ही उस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था का ज्ञान होता है कोई देश कृषि प्रधान पशुपालन अथवा उद्योग प्रदान है। व्यावसायिक संरचना व्यक्ति की व्यवसायिक स्थिति के साथ साथ विचार सामाजिक दृष्टिकोण एवं राजनैतिक संबंधता को भी प्रकट करती है। जनसंख्या में व्यवसायिक संरचना का बहुत अधिक महत्त्व होता है। जिससे उसके जीवन स्तर का भी पता चलता है इस प्रकार व्यावसायिक संरचना के अंतर्गत कुल जनसंख्या में कार्यरत जनसंख्या में विभिन्न व्यवसाय या कार्यों की संगतता का अध्ययन किया जाता है, क्योंकि किसी क्षेत्र या देश में आर्थिक आधुनिकीकरण की दिशा में प्रगति की तीव्रता की जानकारी हुई तो विभिन्न व्यवसायों में लगी जनसंख्या का अवलोकन करना आवश्यक हो जाता है। व्यावसायिक संरचना के अतिरिक्त जनसंख्या का कोई भी पहलू ऐसा नहीं है, जो देश या काल के विकास की सीमा निर्धारित कर सके। जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना द्वारा जनसंख्या के दबाव का आकलन भी किया जाता है। जिससे क्षेत्र विशेषकर आर्थिक विकास की संभावित विकास का आकलन संभव हो सकेगा। कार्यशील जनसंख्या अर्थात 15 से लेकर 59 आयुवर्ग में स्त्री और पुरुष कृषि विनिर्माण व्यावसायिक परिवहन सेवाओं संचार तथा अन्य वर्गीकृत सेवाओं जैसे व्यवसाय में भाग लेते हैं कृषि और मत्स्यन तथा खनन को प्राथमिक क्रिया, विनिर्माण द्वितीयक क्रिया और परिवहन सेवाओं को तृतीयक क्रियाओं तथा अनुसंधान और वैचारिक विकास से जुड़े कार्यों को चतुर्थक क्रियाओं के रूप में वर्गीकृत किया जाता है इन चार खंडों में कार्यशील जनसंख्या का अनुपात किसी राष्ट्र के आर्थिक विकास के स्तरों का एक अच्छा सूचक है, इसका कारण यह है कि केवल उद्योग और अवसंरचना संयुक्त एक विकसित अर्थव्यवस्था ही द्वितीय तृतीय एक और चतुर्थक सेक्टर में अधिक कर्मियो को समायोजित कर सकती है, यदि अर्थव्यवस्था अभी प्राथमिक अवस्था में है, तब प्राथमिक क्रिया से संलग्न लोगों का अनुपात अधिक होगा क्योंकि इससे अधिक मात्रा प्राकृतिक संसाधनों से विद्यमान हैं जनसंख्या के व्यावसायिक संरचना का सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक लाभ के विविध पक्षों से घनिष्ठ कार्यात्मक संबंध होता है, इससे क्षेत्र के रहने वाले निवासियों के रहन सहन और जीवन स्तर का ठीक ठाक अनुमान लगाया जा सकता है। मनुष्य अपने जीवन से संबंधित जो भी कार्य करता है वह उनका व्यवसाय कहलाता है दूसरे शब्दों में जीवन यापन के लिए की जाने वाली आर्थिक क्रिया को व्यवसाय कहते है जनसंख्या का वह भाग जो अतिक्रिया एवं सेवाओं के उत्पादन में संलग्न है कार्यशील जनसंख्या कहलाती है, इसे श्रम शक्ति जनसंख्या भी कहते हैं जिसमें सामान्यतया 15 से 59 तक आयु वर्ग के लोग शामिल होते हैं इसके विपरीत अकार्यशील आयु में कम आयु के बच्चे सेवामुक्त व्यक्ति गृहणी विद्यार्थी या जो अपने जीवन यापन के लिए किसी अन्यक्रिया में संलग्न नहीं है तथा जनसंख्या का वह भाग जो आर्थिक दृश्य से अकार्यशील हो निर्भर जनसंख्या कहलाती है इसमें 0 से 14 आयु वर्ग के बच्चे व 60 से अधिक आयु वर्ग के लोग समाहित होते हैं।

अध्ययन का उद्देश्यः– प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उपदेश कानपुर नगर के व्यावसायिक संरचना का अध्ययन करते हुए उसकी प्रमुख विशेषता को प्रकाश में लाना है जिससे अध्ययन क्षेत्र के संसाधन संबंधी तथ्यों का पता लगाया जा सके । अध्ययन के लिए प्राथमिक जनगणना सार 2011 के आंकड़ों के आधार पर विकासखंड, जिला, प्रदेश तथा भारत के व्यावसायिक संरचना में कार्यशील और अकार्यशील जनसंख्या के परिवर्तन को दिखाया गया है।

अध्ययन का विधितंत्रः– प्रस्तुत अध्ययन में विश्लेषणात्मक विधितंत्र का प्रयोग करते हुए द्वितीय स्रोतों से प्राप्त आंकड़े जो प्राथमिक जनगणना सार 2011 से लिए गए हैं। कानपुर नगर को अध्ययन की इकाई के रूप में

चुना गया है तथा विकासखंड क्षेत्र विवाद में समाधान की एक प्रणाली है इसका काम व्यापक सिद्धांत पर आधारित होते हुए कार्य को सरल बनाना है। आर्थिक दृष्टि से जनसंख्या की व्यवसायिक संरचना का विशेष महत्त्व है।

अध्ययन क्षेत्रः– कानपुर नगर उत्तर प्रदेश राज्य के महत्वपूर्ण शहरों एक है। यह शहर गंगा नदी के दक्षिण– पश्चिम तट पर स्थित है। यह शहर उत्तर प्रदेश के आर्थिक एवं औद्योगिक व्यवसाय का मुख्य केन्द्र है। कानपुर भारत के प्रमुख शहरो में से एक है। कानपुर नगर का स्थलीय स्वरूप पूर्णतः मैदानी है, जो गंगा एवं यमुना नदियों के दोआब के निचले भाग में स्थित है। इस जनपद की उत्तर–पूर्व सीमा गंगा नदी एवं दक्षिण– पश्चिम सीमा यमुना नदी के द्वारा निर्धारित होता हैं।कानपुर नगर की सीमाये कई जिलो से लगती है, जिसमें कानपुर देहात, उन्नाव, हरदोई, फतेहपुर, कन्नौज और हमीरपुर शामिल है। इस प्रकार उत्तरी भाग में उन्नाव जनपद पूर्वी भाग में फतेहपुर एवं दक्षिण– पश्चिम भाग में कानपुर देहात जनपद की सीमाये है।

इसका भौगोलिक विस्तार निम्नलिखित सीमाओं तक होता है। कानपुर नगर लगभग 25 55′ 17″ उत्तरी अक्षांश से 26 57′ 39″ उत्तरी अक्षांश तक और 79 53′ 37″ पूर्वी देशान्तरसे 80° 33′ 59″ पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। कानपुर नगर की औसत ऊचांई समुद्र तल से 126 मी० (413 फीट) हैं। कानपुर नगर जनपद का भौगोलिक क्षेत्रफल जनगणना एवं राजस्व विभाग के अभिलेखानुसार 3005 वर्ग किमी० हैं। जो कुल उत्तर प्रदेश के क्षेत्रफल का 1.01 है। इस जनपद के अंतरगर्त तीन तहसीले आती है। घाटमपुर, कानपुर नगर एवं बिल्हौर है तथा इसके अंतरगर्त दस विकासखण्ड है। कल्याणपुर, बिधनू, सरसौल, बिल्हौर, शिवराजपुर, चौबेपुर, ककवन, घाटमपुर, पतारा एवं भीतरगॉव है। इस जनपद के दस विकासखंडों में से सबसे बड़ा विकासखण्ड घाटमपुर है। जिसका क्षेत्रफल 502 वर्ग किमी० है। तथा सबसे छोटा विकासखण्ड ककवन है जिसका क्षेत्रफल 129 वर्ग किमी० है। इस जनपद में ग्रामीण क्षेत्रफल 2651 वर्ग किमी० एवं नगरीय क्षेत्र 320 वर्ग किमी० हैं।

साक्षरता ही राष्ट्र के विकास के मापक के रूप में भी लिया जाता है इसके साथ ही साक्षरता मनुष्य के सोच–विचार और कार्य करने की योग्यता में वृद्धि करती है। इससे व्यक्ति के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक प्रगति का मार्ग प्रशस्त होता है, क्योंकि निरक्षर या अनपढ़ व्यक्ति समाज और देश की वर्तमान वास्तविक स्थिति को समझने में असमर्थ होता है और देश के विकास में अपनी उचित भूमिका भी नहीं दे पाता है। पं0 जवाहर लाल नेहरू के शब्दों में 'निरक्षरों से बदलते राष्ट्र में औद्योगिक क्रान्ति सम्भव नहीं'। वर्तमान काल में वे प्रदेश आर्थिक रूप से अधिक सम्पन्न है, जहाँ साक्षरता दर उच्च है और वे प्रदेश पिछड़े हुए है जहाँ साक्षरता दर निम्न है। गाँधी जी ने हरिजन पत्रिका में लिखा है 'जनसमूह की निरक्षरता हिन्दुस्तान का कलंक तथा श्राप है, शर्म है और वह दूर होगी। किसी राष्ट्र का पतन या उथान शिक्षा की आधारभूमि पर ही खड़ा है (शर्मा, 2010)।

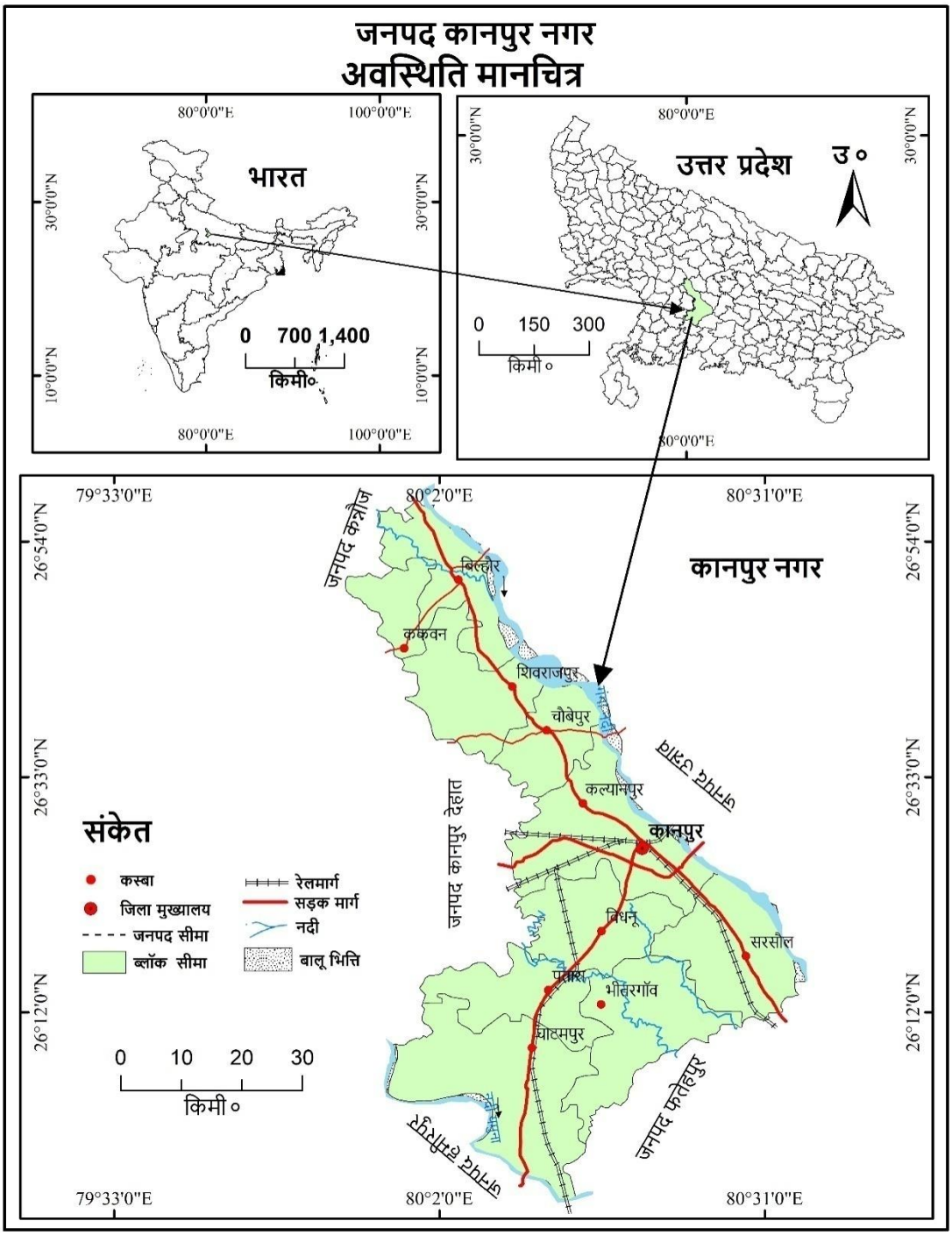

चित्र :1

कार्यशील और अकार्यशील जनसंख्या की तुलना (प्रतिशत में) :– कानपुर नगर में 2011 में कार्यशील जनसंख्या 35.95 प्रतिशत थी जबकि अकार्यशील जनसंख्या 64.05 प्रतिशत थी। इसी प्रकार उत्तर प्रदेश में कार्यशील जनसंख्या 32.93 प्रतिशत थी जबकि अकार्यशील जनसंख्या 67.06 प्रतिशत थी। 2011 तक भारत में कार्यशील

जनसंख्या 39.79 प्रतिशत है जबकि अकार्यशील जनसंख्या 60.20 प्रतिशत है। इस प्रकार कानपुर नगर में जहाँ वृद्धि की स्थिति पायी जाती है। कानपुर नगर की कार्यशील जनसंख्या उत्तर प्रदेश से अधिक जबकि भारत से कम हैं। वहीं अकार्यशील जनसंख्या में लगातार वृद्धि हुई हैं। जिसका प्रमुख कारण बेरोजगारी, कृषि क्षेत्र का सीमित होना तथा कानपुर नगर में स्थित उधोग का बन्द होना है जिसके कारण अनेकों लोगों के रोजगार के अवसर सीमित हो गये।

सारणी 1. कानपुर नगर **में व्यावसायिक संरचना की तुलना 2011**

नाम	जनसंख्या	कार्यशील	अकार्यशील
		जनसंख्या (प्रतिशत में)	
भारत	1210854977	39.79	60.20
उत्तर प्रदेष	199812341	32.93	67.06
कानपुर नगर	1565623	35.95	64.05

स्रोत : प्राथमिक जनगणना सार, 2011

सारणी 2: का अध्ययन करने पर पता चलता हैं कि जनगणना 2011 में जनपद कानपुर नगर कार्यशील जनसंख्या 29.92 प्रतिशत है। जनपद से तुलना करने पर पॉच विकासखण्ड की कार्यशील जनसंख्या अधिक जबकि सात विकासखण्ड की जनसंख्या जनपद कानपुर नगर से कम हैं।

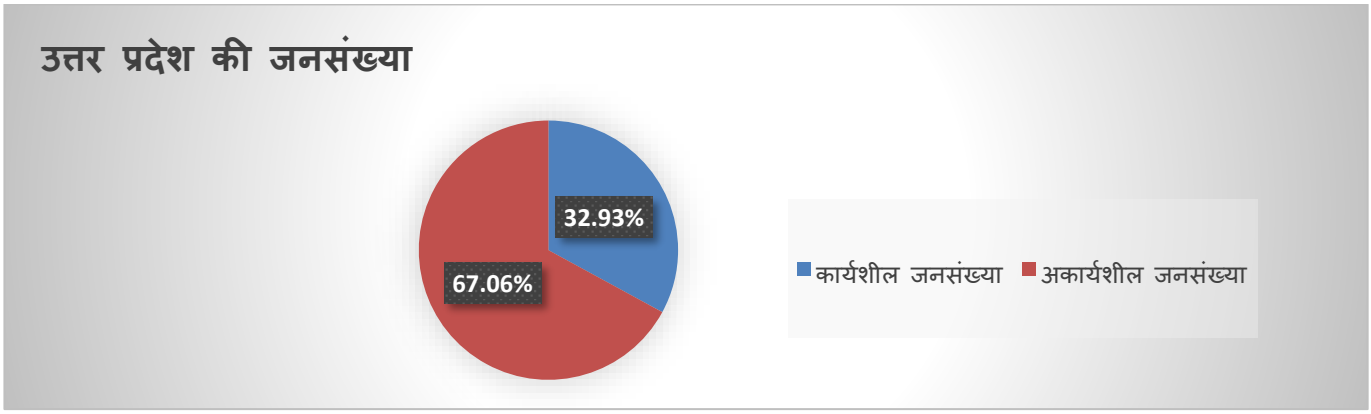

कृषकः– इस श्रेणी के अन्तर्गत वे लोग आते हैं जो अपनी स्वयं की भूमि या किराये अथवा बटायी द्वारा प्राप्त भूमि पर या तो स्वयं कृषि करते हैं या अपने देखरेख में उस भूमि पर कृषि कार्य करवाते हैं। अध्ययन क्षेत्र में लघु एवं सीमान्त कृषकों की अधिकता हैं। सारणी 2 की तुलना करने पर जहाँ कानपुर नगर में 2011 की जनगणना के अनुसार औसत कृषक जनसंख्या 32.33 प्रतिशत थी इसमे भी विकासखण्ड ककवन में सबसे

अधिक 51.74 प्रतिशत, शिवराजपुर में 46.01 प्रतिशत, बिल्हौर में 37.76 प्रतिशत, भीतरगॉव में 33.26 प्रतिशत हैं। जो जनपद के औसत कृषक जनसंख्या से अधिक हैं। जबकि सबसे कम कृषक विकासखण्ड कल्यानपुर में 24. 43 प्रतिशत हैं। इसके बाद क्रमशः बिधनू में 27.02 प्रतिशत, सरसौल में 27.68 प्रतिशत, चौबेपुर में 28.25 प्रतिशत, पतारा में 31.30 प्रतिशत, घाटमपुर में 32.13 प्रतिशत हैं। कानपुर नगर एक कृषि प्रधान क्षेत्र हैं, जिसके फलस्वरुप कृषक जनसंख्या कृषक मजदूर के बाद सबसे अधिक है।

कृषक मजदूरः– कृषक मजदूर राष्ट्र के आर्थिक तंत्र की रीढ है। स्वतंत्रता के पश्चात से ग्रामों के विकास हेतु सरकार द्वारा विविध योजनाएँ क्रियान्वित की गयी हैं लेकिन गाँवों का विकास अति धीमी गति से हुआ हैं। अतः ग्रामीण श्रम पूर्णतः अविकसित है। ग्रामीण श्रम में कृषक मजदूर का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इनके पास अपनी कोई कृषि योग्य भूमि नहीं होती है परन्तु कृषि कार्य में अपना श्रम किराये पर देते हैं। विशेषतः कृषक मजदूरों की स्वयं की समस्याएँ हैं क्योंकि वे समाज में एक निम्न वर्ग से सम्बद्व हैं। सारणी 2 की तुलना करने पर जहाँ कानपुर नगर में 2011 की जनगणना के अनुसार औसत कृषक मजदूर जनसंख्या 40.88 प्रतिशत हैं। इसमें भी विकासखण्ड पतारा में सबसे अधिक 47.81 प्रतिशत एवं घाटमपुर में 44.98 प्रतिशत , बिल्हौर में 44. 32 प्रतिशत , भीतरगॉव में 43.75 प्रतिशत, सरसौल में 43.39 प्रतिशत हैं। जबकि सबसे कम विकासखण्ड चौबेपुर में 31.12 प्रतिशत हैं। इसके बाद क्रमषः कल्यानपुर में 31.25 प्रतिशत , ककवन में 35.50 प्रतिशत , शिवराजपुर में 37.20 प्रतिशत , बिधनू में 39.75 प्रतिशत हैं। कृषि मजदूरों की संख्या में दशकों में विद्यमान असमान प्रवृत्ति, कृषि कार्य में आधुनिक प्राविधिकी का अधिकाधिक उपयोग, भूमि विहीन ग्रामीण जनसंख्या का नगरीकरण, प्रवजन एवं रोजगार के अवसरों में अभिवृद्वि से सम्बन्धित हैं।

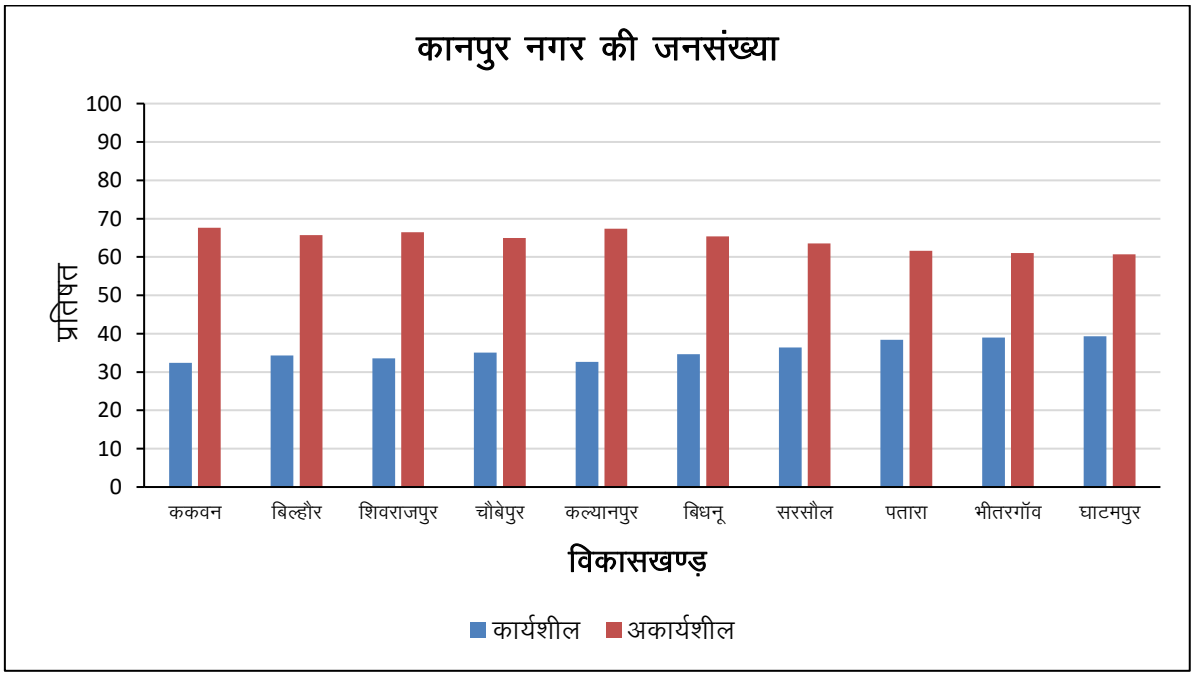

सारणी 2. कानपुर नगर में व्यावसायिक संरचना, 2011

विकासखण्ड़	कुल जनसंख्या	कार्यशील जनसंख्या(प्रतिशत में)	कार्यशील जनसंख्या (प्रतिशत में)				अकार्यशील जनसंख्या(प्रतिशत में)
			कृषक	मजदूर	पारिवारिक उद्योग	अन्य	
ककवन	64250	32.41	51.74	35.50	2.26	10.50	67.59
बिल्हौर	172167	34.31	37.76	44.32	2.19	15.73	65.69
शिवराजपुर	121549	33.55	46.01	37.20	2.80	13.99	66.45
चौबेपुर	128833	35.08	28.25	31.12	4.27	36.35	64.92
कल्यानपुर	171240	32.67	24.43	31.25	3.30	41.02	67.33
बिधनू	179997	34.65	27.02	39.75	4.13	29.10	65.35
सरसौल	187301	36.43	27.68	43.39	4.75	24.18	63.57
पतारा	149958	38.38	31.30	47.81	2.14	18.75	61.62
भीतरगॉव	178550	38.97	33.26	43.75	3.20	19.79	61.03
घाटमपुर	211778	39.34	32.13	44.98	3.80	19.08	60.66
योग	1565623	35.95	32.33	40.88	3.40	23.39	64.05

स्रोत : प्राथमिक जनगणना सार, 2011

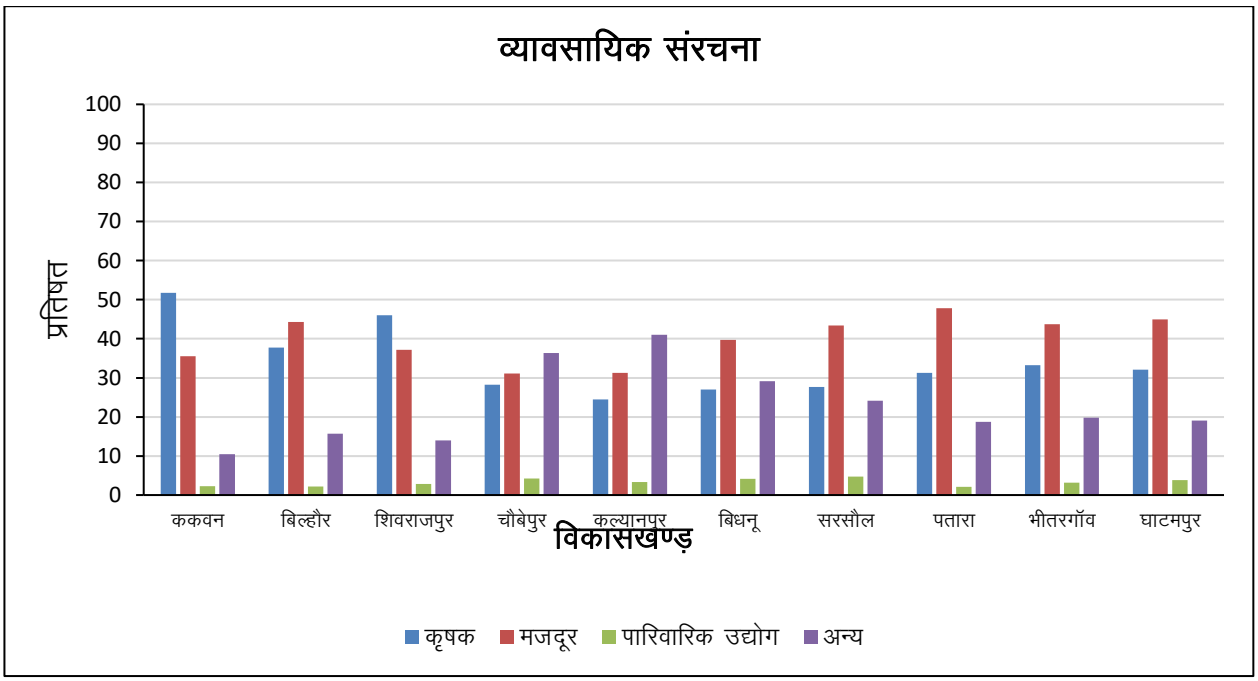

पारिवारिक उद्योगः– पारिवारिक उद्योग के अर्न्तगत घरेलू उद्योग, वाणिज्य मरम्मत का कार्य करने वाली जनसंख्या एवं लघु एवं कुटीर उद्योग में लगी जनसंख्या आती है। सारणी 2 की तुलना करने पर जहाँ कानपुर

नगर में 2011 की जनगणना के अनुसार औसत पारिवारिक उद्योग के अर्न्तगत जनसंख्या का 3.40 प्रतिशत था। इसमें भी विकासखण्ड सरसौल में यह सबसे अधिक 4.75 प्रतिशत था। इसके पश्चात यह चौबेपुर में 4. 27 प्रतिशत , बिधनू में 4.13 प्रतिशत , घाटमपुर में 3.80 प्रतिशत, जो औसत जनसंख्या से अधिक था जबकि सबसे कम विकासखण्ड पतारा में 2.14 प्रतिशत है। इसके बाद क्रमषः बिल्हौर में 2.19 प्रतिशत, ककवन में 2. 26 प्रतिशत , शिवराजपुर में 2.80 प्रतिशत, भीतरगॉव में 3.20 प्रतिशत, कल्यानपुर में 3.30 प्रतिशत था। इस प्रकार पारिवारिक उद्योग के अर्न्तगत जनसंख्या में कमी दर्ज की गयी है। जिसका प्रमुख कारण रोजगार के लिए ग्रामीण जनसंख्या का नगर की तरफ पलायन है।

अन्य कार्यः– कृषि एवं विनिर्माण उद्योग में संलग्न व्यक्तियों के अतिरिक्त कार्यशील जनसंख्या को इस श्रेणी में रखा जाता हैं। जिनका मुख्य कार्य परिवहन, व्यापार एवं संचार होता हैं। सारणी 2 की तुलना करने पर जहाँ कानपुर नगर में 2011 की जनगणना के अनुसार अन्य कार्य के अर्न्तगत औसत जनसंख्या का 23.39 प्रतिशत था। इसमे भी विकासखण्ड कल्यानपुर में सबसे अधिक 41.02 प्रतिशत हैं। इसके पश्चात विकासखण्ड चौबेपुर में 36.35 प्रतिशत, बिधनू में 29.10 प्रतिशत सरसौल में 24.18 प्रतिशत था जो औसत जनसंख्या से अधिक था। जबकि सबसे कम विकासखण्ड ककवन में 10.50 प्रतिशत था। इसके बाद क्रमशः शिवराजपुर में 13.99 प्रतिशत, बिल्हौर में 15.73 प्रतिशत, पतारा में 18.75 प्रतिशत, घाटमपुर में 19.08 प्रतिशत, भीतरगॉव में 19.79 प्रतिशत, था। इस प्रकार अन्य कार्य के अर्न्तगत जनसंख्या का अधिक भाग है।

निष्कर्षः– कानपुर नगर में व्यावसायिक संरचना का तुलनात्मक अध्ययन करने से यह पता चलता है कि कार्यशील जनसंख्या (2011) 562869 है जो कानपुर नगर जनपद के कुल कार्यशील जनसंख्या 35.95 प्रतिशत है। 2011 की कृषक जनसंख्या एवं पारिवारिक उद्योग की जनसंख्या मे कमी दर्ज की गई है। कृषक मजदूर एवं अन्य कार्य के अन्तर्गत जनसंख्या में वृद्धि दर्ज की गई है। कार्यशील जनसंख्या में भी कमी आयी हैं जिसका प्रमुख कारण जीवन प्रत्याशा एवं बेरोजगारी में वृद्धि से है। अध्ययन क्षेत्र एक कृषि प्रधान क्षेत्र है। यहाँ पर खनिज संसाधनों का अभाव है जिसके कारण खनिज आधारित उधोगों का भी अभाव हैं। अध्ययन क्षेत्र में मानवीय मूल्यों को ध्यान में रखकर क्षेत्र के सभी लोगो को आगे लाकर ऐसी व्यवस्था करनी होगी जिससे सम्पूर्ण जनसंख्या को रोजगार का अवसर प्राप्त हो सके और क्षेत्र का सर्वांगीण विकास हो।

अध्ययन से पता चलता है कि कानपुर नगर में कुल कर्मकार व्यक्तियों की संख्या 562869 है जिसमें कुल मुख्य कामगार 412665, सीमान्त कामगार 150204 व्यक्ति हैं। इसके अतिरिक्त, कृषक 181950 तथा कृषि श्रमिक 230126 पारिवारिक कार्यों में लगे व्यक्तियों की संख्या 19125 एवं अन्य कार्य में 131668 व्यक्ति हैं।

सन्दर्भः–

1. ओझा, आर0 एन0 (1983), जनसंख्या भूगोल, प्रतिभा प्रकाशन, कानपुर, पृ0 133–134।
2. ओझा, आर0 एन0 (1984), जनसंख्या भूगोल, प्रतिभा प्रकाशन, कानपुर, पृ0 196।
3. किम, एस0 यू0 सिन्हा, आर0 एण्ड गौर, के0 डी0 (2002), पापुलेषन एण्ड डेवलपमेण्ट, सनराईज पब्लिकेषन, न्यू देलही।
4. कृष्णा, जी0 एण्ड श्याम, एम0 (1977), लिटरेसी इन इण्डिया, जियोग्राफिकल रिव्यू आफ इण्डिया, वाल्यूम 39, पृ0 117–125।
5. गवर्नमेन्ट आफ इण्डिया (1999), क्लाइमेट आफ उ0 प्र0, इ.डिया मैट्रोलाजिकल डिपार्टमेन्ट, पृ0 30
6. गवर्नमेन्ट ऑफ इण्डिया, (1978), स्टेटमेण्ट ऑफ इण्डस्ट्रियल पॉलिसी, मिनिस्ट्री ऑफ इण्डस्ट्रियल डेवलपमेन्ट, नई दिल्ली, पृ0 25।
7. पाण्डेय प्रेम शंकर (2015), बनकटी विकासखण्ड (जनपद–बस्ती) का ग्रामीण विकास एवं नियोजनः एक भौगोलिक अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध भूगोल विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी।
8. प्राथमिक जनगणना सार, 2011